Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
***Impact Factor: 6.28** (Index Copernicus International)*
Volume-VI, Issue-II, October 2017, Page No. 268-278
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

प्राथमिक शिक्षा स्तर पर संचालित ‘बैक टू बेसिक परियोजनाज्का क्रियान्वयन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनीषा गुप्ता
एम.एड. छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

Abstract

An analytical study of ‘Back to Basic’ project has been conducted in the context of subject matter, time and duration, classroom management, reciprocal relation in the group, nature of the interaction, method of teaching and activities, educational materials, techniques of assessment and teacher training. A representative sample of 20 primary schools of Newai block was selected randomly amongst the schools, in which 'Back to Basic' project was being implemented by Kalp NGO. Descriptive type data were collected with the help of unstructured observation, teacher interview schedule and content analysis of available record. Qualitative analysis of data revealed that students can select subject matter as per their pace of learning. Multiplicity of student-centered interaction, use of various techniques in teaching, intensive relationships in the group, use of different techniques for evaluation and child-centered and activity-based learning process signifies the uniqueness of the implementation of the project.

Key Words: Back to Basic, Implementation of Project, Classroom Management, Interaction, Teaching Method and Activities, Techniques of Assessment, Analytical Study.

सबके लिए शिक्षा प्राप्त करना राष्ट्रीय लक्ष्य है, तो इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए देश के सभी 6–14 वर्ष के बच्चों को शिक्षा से जोड़ना आवश्यक है। बच्चे विद्यालय में आए इसके लिए गणवेश व पुस्तकों का निःशुल्क वितरण एवं मध्याह्न भोजन की व्यवस्था आदि के द्वारा चाहे कितने भी प्रलोभन दिये जाए इससे नामांकन में तो वृद्धि हो सकती है परन्तु गुणवत्ता में नहीं। अतः आवश्यक है कि अधिगम प्रक्रिया बच्चों की आवश्यकता और विशेषतानुसार नियोजित की जाए। जिससे समाज में सुसंस्कारी, विचारवान, संवेदनशील, न्यायप्रिय कल्पनाशील बच्चे विकसित हो। किन्तु आज भी

शिक्षा में शिक्षक ही केन्द्र बिन्दु है, जो विद्यार्थियों में स्वनिर्णय, स्वमूल्यांकन, स्वतंत्रता, रचनात्मक एवं स्वयं करके सीखने के अवसर नहीं देता परिणामस्वरूप प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

गैर सरकारी संगठन जिन्हें भारत में आम तौर पर स्वैच्छिक संस्थाएं ([illegible]) कहा जाता है सबके लिए शिक्षा कार्यक्रमों में अत्यधिक सहयोग कर रहे है गैर सरकारी संगठन या स्वैच्छिक संस्थाएं सामुहिक उद्देश्य से बिना किसी लाभ की भावना से ऐसी गठित संस्थाएं है जो लोकतान्त्रिक आधार पर पारदर्शिता के साथ बिना किसी भेदभाव के जनहित का कार्य करती हैं।

शर्मा 1988 के अनुसार कई गैर सरकारी संगठनों का मुख्य उद्देश्य जो विद्यालय नहीं जा रहे हैं उन्हें प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना है वह गैर सरकारी संगठन पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर रहे हैं। कौल (1990) ने अपने अध्ययनों में पाया कि गैर सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं में आर्थिक सम्पन्नता लाने के लिए आय उत्पन्न करने वाले कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा प्रशिक्षण के बाद महिलाओं को औपचारिक नौकरी भी प्राप्त होती है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय (1991) एवं हरियाणा शिक्षा नीति (2000) ने गैर सरकारी संगठनों की भूमिका को शैक्षिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना हैं। कौल (1990), प्रतिष्ठा (2003), चौहान (2004), जिवाणि (2006), पाण्डेय एवं साहू (2007) तथा जैन (2010) के अध्ययनों में शिक्षा एवं सामाजिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में स्वयं सेवी संगठनों की उल्लेखनीय भूमिका पायी गयी।

एन.जी.ओ पर हुए अध्ययनों से पता चलता है कि पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों के लिए शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गैर औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को कार्यान्वित करते हैं। राजस्थान में कार्यरत अनेक गैर सरकारी संगठनों में एक गैर सरकारी संगठन ज्कल्पज्द्वारा जयपुर जिले की चाकसू तहसील व टोंक जिले की निवाई तहसील में चलाई गई ‘बैक टू बेसिक परियोजना’ के विषय में कतिपय प्रश्न उपस्थित हुए, यथा- बैक टू बेसिक परियोजना का क्रियान्वयन किस प्रकार किया जा रहा है? शिक्षण अधिगम की विषय वस्तु क्या होती है? समय का विभाजन एवं कक्ष व्यवस्था किस प्रकार होती है? समूह में पारस्परिक सम्बन्ध और अन्तःक्रिया का स्वरुप कैसा है? किन शिक्षण विधियों और गतिविधियों का उपयोग होता है? शिक्षण हेतु किस प्रकार की सामग्री की व्यवस्था की गई है? मूल्यांकन हेतु किन-किन प्रविधियों का उपयोग किया जाता है? शिक्षकों को प्रशिक्षित करने एवं परियोजना के प्रति प्रतिपुष्टि प्राप्त करने हेतु किस प्रकार का तंत्र विकसित है? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए प्राथमिक शिक्षा स्तर पर संचालित ‘बैक टू बेसिक परियोजनाज्के क्रियान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन उद्देश्य

बैक टू बेसिक परियोजना के क्रियान्वयन का अग्रांकित घटकों के सन्दर्भ में अध्ययन करना-

- शिक्षण अधिगम की विषय वस्तु,
- समय का विभाजन,
- कक्ष व्यवस्था,
- समूह में पारस्परिक सम्बन्ध,
- अन्तःक्रिया की प्रकृति,
- शिक्षण विधि और गतिविधियाँ,
- शिक्षण सामग्री,
- मूल्यांकन प्रविधियाँ एवं
- अध्यापक प्रशिक्षण

अध्ययन हेतु अवधारणा

बैक टू बेसिक परियोजना के विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर संचालित की जा रही है। बैक टू बेसिक परियोजना का क्रियान्वयन विशिष्ट है।

अनुसंधान विधि

इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण अध्ययन की वर्णनात्मक विधि (वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि) का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के टोंक जिले के निवाई ब्लॉक में कल्प एन.जी.ओ. द्वारा संचालित 'बैक टू बेसिक' परियोजना में सम्मिलित समस्त प्राथमिक विद्यालयों में से न्यादर्श हेतु यादृच्छिक विधि से 20 विद्यालयों का चयन किया गया।

अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अग्रांकित उपकरणों का उपयोग किया गया है

- विषयवस्तु विश्लेषण प्रारूप (स्वनिर्मित)
- असंरचित अवलोकन प्रपत्र (अवलोकन के साथ लगातार विकसित)
- शिक्षक साक्षात्कार अनुसूची (स्वनिर्मित)

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त पाठ्य-वस्तु विश्लेषण प्रपत्र तथा अवलोकन व शिक्षक साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से संकलित प्रदत्तों की प्रकृति विवरणात्मक (गुणात्मक) प्रकार की रही।

शोध प्रक्रिया एवं क्रियाविधि

बैक टू बेसिक परियोजना के क्रियान्वयन और परियोजना के प्रति शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण जानने हेतु सर्वप्रथम बैक टू बेसिक परियोजना के ब्लॉक अधिकारी से सम्पर्क किया और अवलोकन की अनुमति प्राप्त की तथा अवलोकन हेतु 3 विद्यालयों में 15 दिन का समय (विद्यालय आरम्भ होने से लेकर बन्द होने तक) निश्चित किया गया। शोध उद्देश्य की पूर्ति हेतु परियोजना में संलग्न शिक्षकों से साक्षात्कार किया गया। शिक्षकों द्वारा प्रकट विचारों कलमबद्ध किया। परियोजना के क्रियान्वयन हेतु अवलोकन तथा साक्षात्कार से प्राप्त विवरणात्मक/गुणात्मक विषयवस्तु का अधिगम प्रक्रिया के घटकों के आधार पर विषय वस्तु विश्लेषण किया गया। इस प्रकार गुणात्मक प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर समेकन किया गया। शोध उद्देश्यानुसार विश्लेषण, समेकन और व्याख्या द्वारा निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

प्रदत्त समेकन एवं निष्कर्ष

पाठ्य-वस्तु विश्लेषण प्रपत्र तथा अवलोकन व शिक्षक साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से बैक टू बेसिक परियोजना के क्रियान्वयन संबंधी संकलित गुणात्मक/विवरणात्मक प्रदत्तों का अध्ययन के उद्देश्यानुसार प्रदत्त समेकन एवं व्याख्या इस प्रकार है-

1. शिक्षण अधिगम की विषय वस्तु

शिक्षकों द्वारा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी और गणित विषय का अध्ययन कराया जाता है साथ ही नैतिक मूल्यों का ज्ञान दिया जाता है। हिन्दी और गणित के साथ विद्यार्थियों को व्यक्तिगत स्वच्छता व नैतिक मूल्यों की भी शिक्षा दी जाती है। अर्थात् अकादमिक विषयों के साथ साथ विद्यार्थियों के विकास हेतु अन्य पक्षों पर भी बल दिया जाता है परन्तु अंग्रेजी विषय का अध्ययन नहीं करवाया जाता है। कतिपय शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों को क्या पढ़ना हैं इसका निर्धारण विद्यार्थियों की रूचि और गति के अनुसार किया जाता है अर्थात् विषय वस्तु के चयन में स्वतन्त्रता अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी केन्द्रितता को अभिव्यक्त करती है जबकि अधिकांश शिक्षकों के मत में विद्यार्थी किस विषय वस्तु का अध्ययन करेंगे, क्या सीखेंगे, इसका निर्धारण उनकी स्वयं की गति पर निर्भर करता है प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति के अनुरूप सीखते हैं।

2. अधिगम प्रक्रिया में समय का विभाजन

बैक टू बेसिक परियोजना में अधिगम प्रक्रिया हेतु समय पूर्व निश्चित है जिसके आधार पर भोजनावकाश पूर्व एक विषय तथा भोजनावकाश पश्चात् दूसरा विषय पढ़ाया जाता है तथा भोजनावकाश के पश्चात् अन्तिम कालांश उच्च स्वर वाचन के लिए रखा जाता है। अधिकांश शिक्षक महसूस करते हैं कि इस परियोजना के अन्तर्गत शिक्षण करते समय नियमित विद्यालयीन शिक्षकों का उचित सहयोग नहीं करने के कारण व समयाभाव के कारण पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाता है। निश्चित समय में पाठ्यक्रम पूरा कराने में कुछ शिक्षक परेशानी अनुभव करते हैं। अधिगम प्रक्रिया में विषयाधारित शिक्षण हेतु 10.30-4.30 तक का समय निर्धारित किया गया है। बाल केन्द्रित एवं क्रिया आधारित अधिगम प्रक्रिया में समयावधि निर्धारित करना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता है। विद्यार्थियों को स्वगति से अधिगम करने का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिए।

3. कक्षा-कक्ष व्यवस्था

अधिकांश विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक के सभी विद्यार्थियों की कक्षा एक साथ चलती है। हिन्दी एवं गणित दोनों विषयों में अधिगम प्रक्रिया के दौरान कक्षा व्यवस्था बच्चों की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए विषय की प्रकृति अनुरूप, वृत्ताकार अर्द्धवृत्ताकर आदि रूपों में की जाती है। बैठक व्यवस्था गतिविधि के अनुसार छोटे-छोटे कई समूहों में तथा एक बड़े समूह में भी की जाती है। भिन्न मानसिक स्तर के विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षण करवाने पर कक्षा का वातावरण शान्त नहीं रहता है। शिक्षक एक साथ सभी की गतिविधियों को निरीक्षित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। विभिन्न समूहों के मध्य शिक्षक का रहना, कक्षा कक्ष का शिक्षण सामग्री से सुसज्जित रहना, बाल केन्द्रित अधिगम प्रक्रिया की आवश्यकतानुसार व्यवस्था का द्योतक है।

4. समूह में पारस्परिक सम्बन्ध

अधिकांश विद्यालयों में बैक टू बेसिक की कक्षा-कक्ष अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थी-शिक्षार्थी संबन्ध मित्रवत् व सौहार्दपूर्ण रहता है। शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य सम्बन्ध मित्रवत व स्नेहपूर्ण है। विद्यार्थी शिक्षक सम्बन्ध परम्परागत अधिगम प्रक्रिया की तुलना में अधिक प्रगाढ़ रूप से दृष्टिगोचर है क्योंकि विद्यार्थी निःसंकोच और भयमुक्त वातावरण में कार्य करते हैं। विद्यालयों में विद्यार्थियों को किसी प्रकार दण्ड नहीं दिया जाता है। शिक्षक पथ-प्रदर्शक, सुविधादाता और उत्प्रेरक के रूप में शिक्षण कार्य में स्वयं सम्भागी होकर विद्यार्थियों की समस्या का धैर्यपूर्वक समाधान करते है।

5. अन्तःक्रिया की प्रकृति

बैक टू बेसिक परियोजना की कक्षागत अधिगम प्रक्रिया में अन्तःक्रिया में विविधता पायी जाती है। जहाँ सम्पूर्ण कक्षा छोटे-छोटे समूहों में विभक्त है होने के कारण अन्तःक्रिया में भी विविधता होती है। यह अन्तःक्रिया कभी शिक्षक विद्यार्थी के मध्य कभी छात्र-विद्यार्थी के मध्य तो कभी शिक्षक विद्यार्थी शिक्षण सामग्री तीनों के मध्य होती है। बैक टू बेसिक परियाजना में कक्षागत अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षक-छात्र, विद्यार्थी शिक्षण सामग्री अन्तःक्रिया की बहुलता है जो बाल केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता भी है। शिक्षक अन्तःक्रिया का निरीक्षण सभी समूहों में बारी-बारी से जाकर करते हैं परन्तु कभी-कभी शिक्षक एक ही स्थान पर बैठकर विभिन्न गतिविधियों का निरीक्षण करता है।

6. शिक्षण विधि और गतिविधियाँ

अधिकांश शिक्षक बैक टू बेसिक परियोजना के अनुसार शिक्षण कार्य करने में रूचि रखते हैं साथ ही अनुभव करते हैं बैक टू बेसिक अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी सामान्य कक्षा कक्ष की तुलना में अधिक ज्ञानार्जन करते हैं। इस परियोजना से विद्यार्थियों में सहयोग, दया, प्रेम, नेतृत्व की क्षमता सृजनात्मक चिन्तन आदि गुणों को विकसित कर पाते हैं। इसमें शिक्षक की भूमिका एक पथ-प्रदर्शक की होती है, क्योंकि विद्यार्थी सम्पूर्ण कार्य स्वयं करते हैं। शिक्षक तो केवल समस्याओं के समाधान में सहयोग प्रदान करते हैं। विद्यार्थी प्रत्येक कालांश में कतिपय शिक्षक केन्द्रित और अधिकांशतः स्व-केन्द्रित गतिविधियों से शिक्षण कार्य करने में व्यस्त रहते हैं। विद्यार्थियों की अधिकाशंतः गतिविधियाँ क्रिया आधारित होती हैं।

बाल मंच का निर्माण स्वयं विद्यार्थी की योग्यता एवं रूचि तथा साथी विद्यार्थियों की योग्यता एवं रूचि तथा साथी विद्यार्थियों की सहमति के आधार पर प्रत्येक पद (प्रधानमंत्री, शिक्षामंत्री, स्वास्थ्यमंत्री, सांस्कृतिकमंत्री) पर एक प्रतिनिधि की नियुक्ति कर बाल मंच का निर्माण करते हैं। बाल प्रतिनिधि अपने पदों के लिए निर्धारित कार्यों को स्वयं व अपने साथी समूहों की सहायता से करते हैं तथा समस्त पदों के प्रतिनिधि अपनी समस्याओं को प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त विद्यार्थी को बताते हैं तथा प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त विद्यार्थी शिक्षकों की सहायता से उन सबकी समस्याओं का समाधान करता है।

अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण विधि एवं गतिविधियों के प्रयोग में शिक्षक व विद्यार्थी आनंदमयी दृष्टव्य हुए हैं शिक्षक स्वयं यह अनुभव करते हैं कि विद्यार्थी परियोजनानुरूप शिक्षण में अधिक क्रियाशील, सहभागी, जिज्ञासामयी और रूचिपूर्ण ढंग से कार्य करते हैं क्योंकि सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया गतिविधि आधारित है जिसमें कतिपय गतिविधियाँ शिक्षक के द्वारा व अधिकांशतः गतिविधियाँ शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थी करते हैं। जो बाल केन्द्रित व क्रिया आधारित प्रक्रिया का द्योतक है

तथा शाला प्रबन्धन समिति की बैठकों का आयोजन कर सदस्यों को बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाता है तथा उन्हें शिक्षा के अधिकार के बारे में भी आवश्यक जानकारी दी जाती है।

7. शिक्षण सामग्री

शिक्षकों के द्वारा किसी भी प्रकार की पूर्व निर्मित सामग्री का उपयोग नहीं किया जाता है। सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री परियोजना के शिक्षकों द्वारा ही निर्मित की जाती है। शिक्षकों के द्वारा निर्मित शिक्षण सामग्री बच्चों की संख्या के अनुसार समूहवार पर्याप्त होती है। शिक्षण सामग्री विषय वार (हिन्दी व गणित) बहुरंगी व आकर्षक निर्मित की जाती है। शिक्षण सामग्री विषयवार बड़े-बड़े (8-9) समूह के अनुसार निर्मित की जाती है जिससे परियोजनानुरूप शिक्षण कार्य करवाने में असमर्थता होती है। शिक्षण सामग्री का प्रयोग शिक्षण में करने से विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया में सहभागिता बढ़ी है जिससे विद्यार्थी पहले से अधिक क्रियाशील होकर कार्य करने लगे हैं। शिक्षण सामग्री में सामान्य काड्र्स, गतिविधि काड्र्स आदि विषयानुरूप सामग्री प्रत्येक विद्यार्थी के अनुसार निर्मित नहीं की जाती है। जिसके कारण शिक्षक शिक्षण कार्य में कठिनाई अनुभव करते हैं। शिक्षण सामग्री के प्रयोग से विद्यार्थियों में सहयोग, आत्मविश्वास, रचनात्मक आदि गुणों का विकास होता है।

8. मूल्यांकन प्रविधियाँ

मूल्यांकन हेतु विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। विद्यार्थियों का सतत् मूल्यांकन किया जाता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन दक्षता चार्ट के अन्तर्गत अंकित किया जाता है। हिन्दी और गणित विषय के साथ-साथ विद्यार्थियों के व्यवहारिक पक्ष का भी मूल्यांकन किया जाता है। समस्त विद्यालयों में मूल्यांकन हेतु विविध तकनीकों जैसे सतत् मूल्यांकन, स्वमूल्यांकन, साथी मूल्यांकन, व्यक्तिशः मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है। मूल्यांकन में अनुशासन, व्यक्तिगत स्वच्छता को भी शामिल किया जाता है। विद्यार्थियों का सतत् मूल्यांकन किये जाने से उन पर परीक्षा का बोझ नहीं रहता वरन् दक्षता चार्ट पर उसकी उपलब्धि अंकित कर दी जाती है। मूल्यांकन मुख्यतः शिक्षक द्वारा ही किया जाता है।

9. अध्यापक प्रशिक्षण

बैक टू बेसिक परियोजना में अध्यापकों के प्रशिक्षण के सन्दर्भ में पाया गया कि परियोजना के शिक्षकों को शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण तथा क्रिया आधारित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संचालित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण 5 दिन का होता है तथा 5 दिन का प्रशिक्षण उन्हें साल के मध्य में दिया जाता है जिससे वह शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं का समाधान पा सकें। यह प्रशिक्षण परियोजना के समन्वयक के द्वारा दिया जाता है। शिक्षकों के अनुसार प्रशिक्षण की यह अवधि पर्याप्त नहीं है क्योंकि इतने कम समय में उन पर्याप्त कौशलों एवं

अपेक्षाओं को नहीं सीख पाते जो कि भिन्न-भिन्न शिक्षण सामग्री बनाने एवं शिक्षण सामग्री में नवीनता लाने के लिए जरूरी है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बैक टू बेसिक परियोजना के क्रियान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। पाठ्यवस्तु विश्लेषण साक्षात्कार एवं अवलोकन के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि बैक टू बेसिक परियोजना की क्रियान्विति विशिष्ट है। इसमें शिक्षक समूह में एक अभिप्रेरक और मार्ग दर्शक के रूप में शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों की मदद करता है।

परियोजना के उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व विकास में सहायक हैं और उन्हें व्यावहारिक रूप में लागू किया जा सकता है। शिक्षकों को परियोजना के उद्देश्यों के अनुसार शिक्षण कार्य करवाना बोझिल नहीं लगता है। किसी भी संगठन को चाहिए कि वह अपने उद्देश्यों को परिभाषित करें और शिक्षकों को उद्देश्यों से आत्मसात कराया जाये। अतः यदि किसी भी कार्य या परियोजना के उद्देश्यों को स्पष्ट परिभाषित किया जाए तो किसी भी कार्य या परियोजना का बेहतर संचालन किया जा सकता है।

परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु दी गई प्रशिक्षण अवधि पर्याप्त नहीं है जिससे परियोजना अनुरूप शिक्षण कार्य करने में कठिनाई अनुभव होती है। अतः किसी भी कार्य के सफल क्रियान्वयन के लिए उस कार्य के प्रति पर्याप्त प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है जिससे किसी भी प्रकार की कठिनाई महसूस न हो। प्रशासकों के लिए आवश्यक है कि किसी भी योजना के लिए पर्याप्त अवधि तक उचित प्रशिक्षण दिया जाये।

गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी अधिक क्रियाशील रहते हैं उनमें सहयोग और स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है साथ ही उनमें सृजन शक्ति का विकास होता है। बालक का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। अतः शिक्षक द्वारा गतिविधि आधारित अधिगम करवाया जायें जो कि बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक है। विद्यार्थियों को उनकी गति के अनुसार सिखाया जाता है क्योंकि प्रत्येक बालक में वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है। अतः निष्कर्ष के अनुसार शिक्षकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को उनके स्तर के अनुसार शिक्षण करवाया जाए। बालक को उसकी अधिगम कठिनाई के अनुसार शिक्षण कार्य किया जाए। और शिक्षण में पूर्ण स्वतंत्रता दी जाए।

शिक्षण के दौरान प्रयुक्त विषय वस्तु विद्यार्थियों के मानसिक स्तर एवं आवश्यकता के अनुरूप है साथ ही विषय वस्तु के चयन में स्वतंत्रता, स्वगति से सीखने का अवसर विशिष्टता को अभिव्यक्त करता है। कक्षा शिक्षण में अधिगम हेतु समय पूर्व निर्धारित है। जिसमें लचीलेपन का अभाव पाया

जाता है। कक्षा में विद्यार्थी विभिन्न छोटे-छोटे समूहों में कार्य करते हैं साथ ही कक्षा की सजावट का अवलोकन कर स्वयं सीखते हैं। अतः गतिविधियों के अनुरूप छोटे बड़े समूहों में कक्षा व्यवस्था तथा विद्यार्थियों के समूह के मध्य शिक्षक का रहना और कक्षा में अधिगम सामग्री को सुसज्जित रखना विशिष्टता का द्योतक है। शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थी केन्द्रित विधियों से शिक्षण कराया जाता है जिसमें विद्यार्थी शिक्षण के प्रारम्भ होने से पूर्व और अन्त तक विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण करते है अतः परियोजना की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया क्रिया आधारित है। शिक्षण कार्य के दौरान परियोजनानुरूप शिक्षण सामग्री के माध्यम से शिक्षण कराने का प्रयास किया जाता है परन्तु विद्यालयों में विषयानुसार सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, परन्तु प्रत्येक छात्रानुसार सामग्री का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

शिक्षण अधिगम सामग्री विद्यार्थियों की संख्या एवं विषय की माँग के अनुसार निर्मित की जाती है तथा प्रयोग की जाने वाली सामग्री से गुणात्मक सुधार होता है क्योंकि यह बच्चों के मानसिक स्तर के अनुरूप होती है। अतः शिक्षकों के द्वारा बालकों को उनके मानसिक स्तर के अनुरूप शिक्षण सामग्री दी जानी चाहिए तथा प्रशासकों के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक स्तर व वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण सामग्री निर्मित की जानी चाहिए। तथा शिक्षण सामग्री आकर्षक होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी उसमें रूचि ले सकें। एक साथ शिक्षण करवाने से विद्यार्थियों के अधिगम पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है वरन् उसमें सहयोग की भावना का विकास होता है साथ ही कक्षा सजावट का विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षकों के द्वारा कक्षा की शिक्षण सामग्री के माध्यम से सजावट की समुचित व्यवस्था करवानी चाहिए जिससे विद्यार्थी रूचि लेकर ज्ञानार्जन कर सकें। शिक्षण कार्य उन्हें बोझ न लगे।

अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन हेतु अनेक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है किन्तु विद्यार्थियों पर परीक्षा का बोझ नहीं रहता। परन्तु अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी के प्रत्येक व्यवहार क्रिया और उपलब्धि का सतत् मूल्यांकन किया जाता है जो इसके सकारात्मक पक्ष का द्योतक है। विद्यार्थियों के प्रारम्भिक स्तर का निर्धारण उनकी गतिविधियों का अवलोकन करके किया जाता है और अनुदेशन प्रक्रिया का सतत् मूल्यांकन किया जाता है। अतः प्रशासकों के द्वारा परीक्षा प्रणाली का बोझ हटाकर बालकों की गतिविधियों को मूल्यांकित करने का प्रावधान किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों के द्वारा बालकों की गतिविधियों का सतत् मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

बैक टू बेसिक परियोजना की कक्षागत अधिगम प्रक्रिया में छात्र-विद्यार्थी व शिक्षक के मध्य प्रगाढ़ सम्बन्ध दृष्टिगोचर होते हैं। जहाँ विद्यार्थी निःसंकोच भाव से अपने साथी और शिक्षक की मदद से शिक्षण कार्य करते हैं। समूह में अन्तः क्रिया की प्रकृति विद्यार्थी समूह और विद्यार्थी शिक्षण

सामग्री की बहुलता पायी जाती है। जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बाल केन्द्रित रूप प्रदान कर विशिष्ट बनाती है।

इस परियोजना की मुख्य कमियों के सन्दर्भ में यह ज्ञात हुआ कि सरकारी विद्यालय के अध्यापकों पर कोई दबाव नहीं होने के कारण कतिपय अध्यापक इस इस परियोजना में निहित अच्छी बातों नहीं अपना रहे हैं। न ही वे इसमें सहयोग प्रदान करते हैं। परियोजना में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक भी वेतन की कमी होने के कारण बीच में ही छोड़कर चले जाते हैं और फिर किसी नये अध्यापक को इस परियोजना से जोड़ना मुश्किल हो जाता है। परियोजना के इस पहलू पर सुधार करने की आवश्यकता है।

अतः कहा जा सकता है कि बैक टू बेसिक परियोजना की कक्षागत प्रक्रिया में विद्यार्थियों की गति अनुसार विषय वस्तु चयन में स्वतन्त्रता, विद्यार्थी केन्द्रित अन्तः क्रिया की बहुलता, शिक्षण में विविध प्रविधियों का प्रयोग, समूह में प्रगाढ़ सम्बन्ध, मूल्यांकन हेतु विविध प्रविधियों का प्रयोग किया जाना बाल केन्द्रित व क्रिया आधारित अधिगम प्रक्रिया को अभिव्यक्त करता है जो कि परियोजना के क्रियान्वयन की विशिष्टता का द्योतक है। इस परियोजना से प्राप्त अनुभवों का उपयोग कर न केवल इस परियोजना के क्रियान्वयन में सुधार किया जा सकता है वरन् भावी परियोजनाओं के नियोजन एवं क्रियान्वयन हेतु सूझ प्राप्त हो सकती है। इस परियोजना का क्रियान्वयन यद्यपि सीमित विस्तार के साथ किया गया है तथापि परियोजना में शिक्षण-अधिगम की विशिष्ट कार्यविधि अपनाते हुए शिक्षण कार्य से विद्यार्थी सामान्य कक्षा-कक्ष की तुलना में अधिक लाभान्वित हुए हैं। अतः आंशिक सुधार करते हुए इस परियोजना या इसके जैसी नवीन परियोजना क्रियान्वयन अन्य प्राथमिक विद्यालयों में भी किया जा सकता है। शिक्षक इस परियोजना से सीखते हुए विद्यार्थियों को सीखने में सहायता देने के लिए नयी और क्रियात्मक गतिविधियों का सतत् आयोजन करवाते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार कर सकते हैं। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के उन्नयन के क्रम में इस अध्ययन की निष्पत्तियों का उपयोग किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौहान, श्याम सुन्दर (2004). राष्ट्र के विकास एवं समाज की सेवा में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, अक्टूबर.
2. जैन, अनिता (2010). रोल ऑफ 'वाफ्ड्' इन दा एजुकेशनल डवपलमेन्ट ऑफ वूमैनः ए केस स्टडी, शोध प्रबन्ध वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.
3. जिवाणि, किरण (2006). गुजरात की आदिवासी महिला शिक्षा हेतु गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासः एक अध्ययन, एम.एड., लघु शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

4. कौल, ए. (1990). दा रोल ऑफ एन.जी.ओ., एन.सी.ई.आर.टी., फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम- वर्ष-1988-92.
5. पाण्डेय, एस.के. एवं लक्ष्मी, प्रसाद साहू (2007). रोल ऑफ नॉन गवर्नमेन्ट ऑर्गेनाइजेशन, एजूट्रेक, नीलकमल, पब्लिकेशन, वॉल्यूम-6, नं.-10.
6. प्रतिष्ठा (2003). बाल श्रमिकों के विकास के लिए 'प्रेरणा' के प्रयासों का अध्ययन, एम.एड., लघु-शोध प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.